मधुशाला

बच्चन

•

हिन्दी के लोकप्रिय कवि 'बच्चन' की ख्याति कोचार चांद लगाने में 'मधुशाला' का बहुत बड़ा स्थान रहा है। यद्यपि कवि का पूरा काव्य श्रेष्ठता की ऊंचाइयों को छूता है, पर 'मधुशाला' की सर्वप्रियता के बारे में दो मत नहीं। वही बहुचर्चित काव्य-पुस्तिका अपनी अभिनव साज-सज्जा में···जिसकी अब तक दो लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं।

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स

मधुशाला

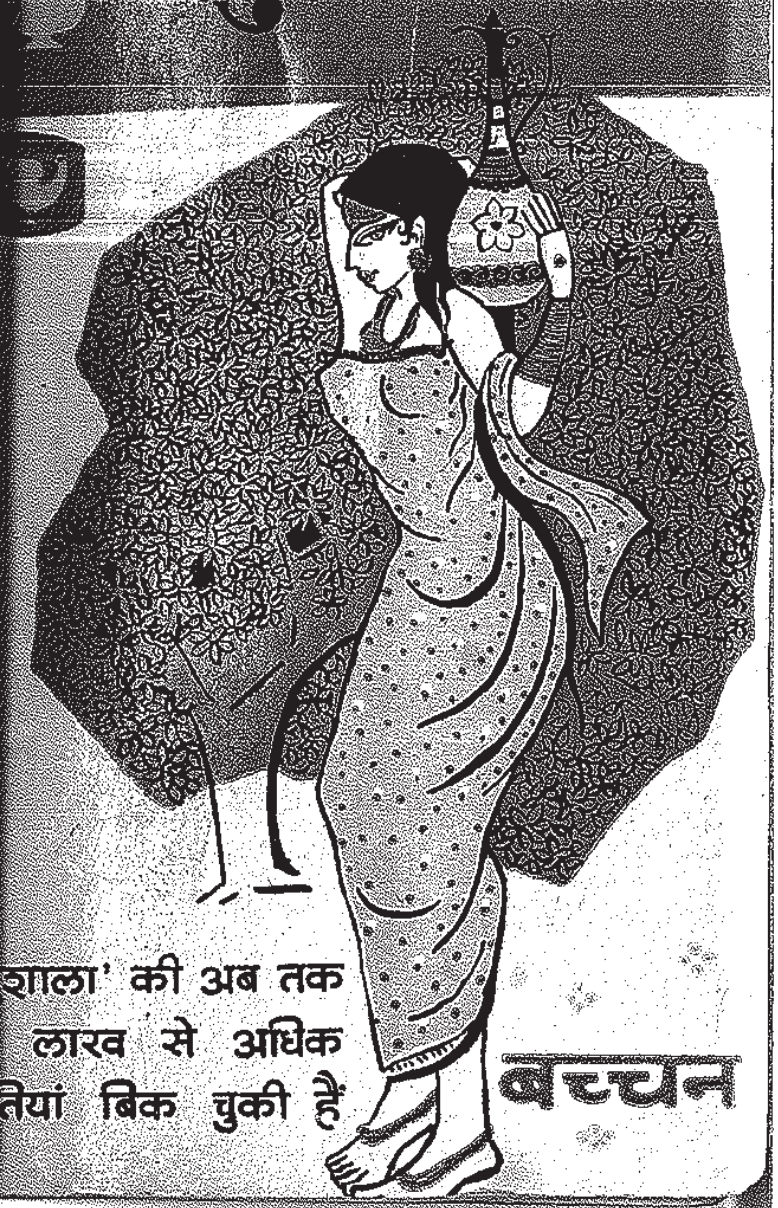

शाला' की अब तक
लाख से अधिक
तियां बिक चुकी हैं

बच्चन

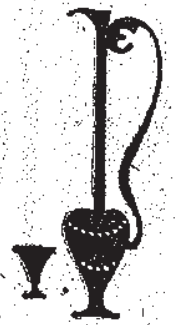

MADHUSHALA : BACHCHAN : POETRY

मधुशाला

१

मृदु भावों के अंगूरों की
आज बना लाया हाला,
प्रियतम, अपने ही हाथों से
आज पिलाऊँगा प्याला;
पहले भोग लगा लूँ तेरा,
फिर प्रसाद जग पाएगा;
सबसे पहले तेरा स्वागत
करती मेरी मधुशाला ।

२

प्यास तुझे तो, विश्व तपाकर
पूर्ण निकालूंगा हाला,
एक पाँव से साक़ी बनकर
नाचूंगा लेकर प्याला ;
जीवन की मधुता तो तेरे
ऊपर कबका वार चुका,
आज निछावर कर दूंगा मैं
तुझपर जग की मधुशाला ।

३

प्रियतम, तू मेरी हाला है,
मैं तेरा प्यासा प्याला,
अपने को मुझमें भरकर तू
बनता है, पीनेवाला ;
मैं तुझको छक छलका करता,
मस्त मुझे पी तू होता ;
एक दूसरे को हम दोनों
आज परस्पर मधुशाला ।

४

भावुकता अंगूर लता से
खींच कल्पना की हाला,
कवि साक़ी बनकर आया है
भरकर कविता का प्याला ;
कभी न कण भर खाली होगा,
लाख पिएँ दो लाख पिएँ !
पाठकगण हैं पीनेवाले,
पुस्तक मेरी मधुशाला ।

५

मधुर भावनाओं की सुमधुर
नित्य बनाता हूँ मैं हाला,
भरता हूँ इस मधु से अपने
अंतर का प्यासा प्याला ;
उठा कल्पना के हाथों से
स्वयं उसे पी जाता हूँ ;
अपने ही में हूँ मैं साक़ी,
पीनेवाला, मधुशाला ।

६

मदिरालय जाने को घर से
चलता है पीनेवाला,
'किस पथ से जाऊँ ?' असमंजस
में है वह भोलाभाला ;
अलग-अलग पथ बतलाते सब
पर मैं यह बतलाता हूँ—
'राह पकड़ तू एक चला चल,
पा जाएगा मधुशाला ।'

७

चलनें ही चलने में कितना
जीवन, हाय, बिता डाला !
'दूर अभी है', पर, कहता है
हर पथ बतलानेवाला ;
हिम्मत है न बढ़ूँ आगे को,
साहस है न फिरूँ पीछे ;
किंकर्तव्यविमूढ़ मुझे कर
दूर खड़ी है मधुशाला ।

८

मुख से तू अविरत कहता जा
मधु, मदिरा, मादक हाला,
हाथों में अनुभव करता जा
एक ललित कल्पित प्याला,
ध्यान किए जा मन में सुमधुर,
सुखकर, सुन्दर साक़ी का ;
और बढ़ा चल, पथिक, न तुझको
दूर लगेगी मधुशाला ।

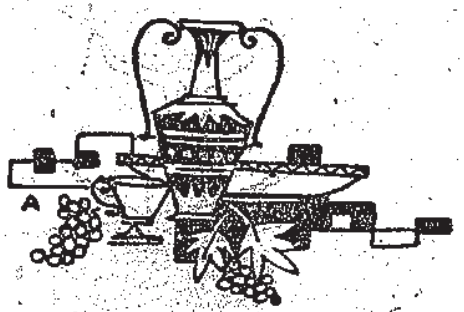

९

मदिरा पीने की अभिलाषा
ही बन जाए जब हाला,
अधरों की आतुरता में ही
जब आभासित हो प्याला,
बने ध्यान ही करते-करते
जब साक़ी साकार, सखे,
रहे न हाला, प्याला, साक़ी,
तुझे मिलेगी मधुशाला।

१०

सुन, कलकल, छलछल मधु-
घट से गिरती प्यालों में हाला,
सुन, रुनझुन, रुनझुन चल
वितरण करती मधु साक़ीबाला;
बस आ पहुँचे, दूर नहीं कुछ,
चार क़दम अब चलना है;
चहक रहे, सुन, पीनेवाले,
महक रही, ले, मधुशाला।

११

जलतरंग बजता, जब चुंबन
करता प्याले को प्याला,
वीणा झंकृत होती, चलती,
जब रुनझुन साक़ीबाला,
डाँट-डपट मधुविक्रेता की
ध्वनित पखावज करती है;
मधुरव से मधु की मादकता
और बढ़ाती मधुशाला।

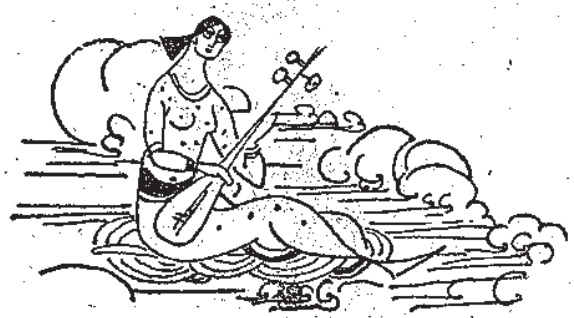

१२

मेहँदी-रंजित मृदुल हथेली
पर माणिक मधु का प्याला,
अंगूरी अवगुंठन डाले
स्वर्ण - वर्ण साक़ीबाला,
पाग बैंजनी, जामा नीला
डाट डटे पीनेवाले ;
इन्द्रधनुष से होड़ लगाती
आज रँगीली मधुशाला ।

१३

हाथों में आने से पहले
नाज़ दिखाएगा प्याला,
अधरों पर आने से पहले
अदा दिखाएगी हाला,
बहुतेरे इन्कार करेगा
साक़ी आने से पहले ;
पथिक, न घबरा जाना, पहले
मान करेगी मधुशाला ।

१४

लाल सुरा की धार लपट-सी
कह न इसे देना ज्वाला,
फेनिल मदिरा है, मत इसको
कह देना उर का छाला,
दर्द नशा है इस मदिरा का
विगत स्मृतियाँ साक़ी हैं;
पीड़ा में आनंद जिसे हो,
आए मेरी मधुशाला।

१५

जगती की शीतल हाला-सी,
पथिक, नहीं मेरी हाला,
जगती के ठंडे प्याले-सा,
पथिक, नहीं मेरा प्याला;
ज्वाल-सुरा जलते प्याले में
दग्ध हृदय की कविता है;
जलने से भयभीत न जो हो,
आए मेरी मधुशाला।

१६

बहती हाला देखी, देखो
लपट उठाती अब हाला,
देखो प्याला अब छूते ही
होठ जला देनेवाला ;
'होठ नहीं, सब देह दहे, पर
पीने को दो बूँद मिले'—
ऐसे मधु के दीवानों को
आज बुलाती मधुशाला।

१७

घर्म-ग्रंथ सब जला चुकी है
जिसके अन्तर की ज्वाला,
मंदिर, मस्जिद, गिरजे—सबको
तोड़ चुका जो मतवाला,
पंडित, मोमिन, पादरियों के
फंदों को जो काट चुका,
कर सकती है आज उसी का
स्वागत मेरी मधुशाला।

लालायित अधरों से जिसने,
हाय, नहीं चूमी हाला,
हर्ष-विकंपित कर से जिसने,
हा, न छुआ मधु का प्याला,
हाथ पकड़ लज्जित साक़ी का
पास नहीं जिसने खींचा,
व्यर्थ सुखा डाली जीवन की
उसने मधुमय मधुशाला ।

बने पुजारी प्रेमी साक़ी,
गंगाजल पावन, हाला,
रहे फेरता अविरत गति से
मधु के प्यालों की माला,
'और लिये जा, और पिये जा'—
इसी मंत्र का जाप करे,
मैं शिव की प्रतिमा बन बैठूं,
मंदिर हो यह मधुशाला ।

२०

बजी न मंदिर में घड़ियाली,
चढ़ी न प्रतिमा पर माला,
बैठा अपने भवन मुअज़्ज़िन
देकर मस्जिद में ताला,
लुटे खज़ाने नरपतियों के,
गिरीं गढ़ों की दीवारें;
रहें मुबारक पीनेवाले,
खुली रहे यह मधुशाला।

२१

बड़े-बड़े परिवार मिटें यों,
एक न हो रोनेवाला,
हो जाएँ सुनसान महल वे,
जहाँ थिरकतीं सुरबाला,
राज्य उलट जाएँ, भूपों की
भाग्य-सुलक्ष्मी सो जाए;
जमे रहेंगे पीनेवाले,
जगा करेगी मधुशाला।

सब मिट जाएँ, बना रहेगा
सुन्दर साक़ी, यम काला,
सूखें सब रस, बने रहेंगे
किन्तु, हलाहल औ' हाला,
धूमधाम औ' चहल-पहल के
स्थान सभी सुनसान बनें,
जगा करेगा अविरत मरघट,
जगा करेगी मधुशाला ।

बुरा सदा कहलाया जग में
बाँका, मद-चंचल प्याला,
छैल-छबीला, रसिया साक़ी,
अलबेला पीनेवाला;
पटे कहाँ से, मधुशाला औ'
जग की जोड़ी ठीक नहीं—
जग जर्जर प्रतिदिन,प्रतिक्षण,पर
नित्य नवेली मधुशाला ।

२४

बिना पिए जो मधुशाला को
बुरा कहे, वह मतवाला,
पी लेने पर तो उसके मुँह
पर पड़ जाएगा ताला;
दास-द्रोहियों दोनों में है
जीत सुरा की, प्याले की;
विश्वविजयिनी बनकर जग में
आई मेरी मधुशाला।

२५

हरा-भरा रहता मदिरालय,
जग पर पड़ जाए पाला,
वहाँ मुहर्रम का तम छाए,
यहाँ होलिका की ज्वाला;
स्वर्ग लोक से सीधी उतरी
वसुधा पर, दुख क्या जाने;
पढ़े मर्सिया दुनिया सारी,
ईद मनाती मधुशाला।